[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 9139

Unique Paper Code	:	12051403
Name of the Paper	:	Hindi Paper-X (Hindi Upanyas)
Name of the Course	:	**B.A. (H) Hindi (CBCS)**
Semester	:	IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) औरत की ज़िन्दगी और है ही किसलिए बहनजी! वह अपने दिल से लाचार है, जिससे वफा की उम्मीद करती है, वही दग़ा करता है । उसका क्या अख्तियार ? लेकिन बेवफाओं से मुहब्बत न हो, तो मुहब्बत में मजा ही क्या रहे । शिकवा-शिकायत, रोना-धोना, बेताबी और बेकरारी यही तो मुहब्बत के मज़े हैं, फिर मैं तो वफा की उम्मीद भी नहीं करती थी ।

अथवा

"जो अपने से चाहता हूँ। अपने से चाहता हूँ कि निकल चलूँ। इस फैले विश्व में भयभीत को ढाढ़स दूँ। भूखे के लिए अन्न की व्यवस्था करूँ, दम्भी का दम्भ तोड़ूँ संकीर्ण स्वार्थों की दीवारें जो समाज में खड़ी हैं उन्हें ढहा न दूँ तो उनमे द्वार-खिड़कियाँ तो खोल दूँ। तुमसे चाहता हूँ कि जब तक तुम आर्त्त की पुकार सुन सकती हो, तब उस पुकार की तरफ बढ़ भी चलो।"

(ख) "मूर्ख, तूने और तेरे स्वामी ने परलोक देखा है। यह विश्वास ही तेरी दासता है। तू अपने पर स्वामी के अधिकार को स्वीकार करता है, यह तेरी दासता का बंधन है। तू संकट से पलायन कर रक्षा चाहता है, यह तेरी निर्बलता है। संकट सब स्थान और समय में तेरे साथ रहेगा। संकट का पराभाव कर। पराभूत होना ही पाप है। उसका फल तू तत्काल भोगेगा। तू स्वतंत्र 'कर्त्ता' है।"

अथवा

"और इस स्थिति की दो ही परिणतियाँ हो सकती हैं... होंगी। या तो तुम उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त करके उस पर हावी होने की कोशिश करोगी और या फिर अपने को बहुत ही

उपेक्षित और अपमानित महसूस करोगी। उस समय तुम्हें यही लगेगा कि जिसके पीछे तुमने अपनी सारी ज़िंदगी बरबाद की, वह अब तुम्हें ही भूलकर अपनी जिंदगी जीने की बात सोच रहा है।"

2. 'कर्मभूमि' उपन्यास में तत्कालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया गया है। इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। (15)

3. "'आपका बंटी' उपन्यास में समाज के वर्तमान जीवन की समस्याओं का उद्घाटन हुआ है', स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक पर्तों को खोलता है। स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'सुनीता' स्त्रीप्रधान उपन्यास है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"'दिव्या' इतिहास की नई संभावनाओं को संकेत देने वाला उपन्यास है" इस कथन की विवेचन कीजिए। (15)

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (

(क) 'दिव्या' उपन्यास की मूल संवेदना ;

(ख) 'आपका बंटी' का कथ्य ;

(ग) 'कर्मभूमि' उपन्यास में नारी-जागृति का स्वर ;

(घ) 'सुनीता' उपन्यास में हरिप्रसन्न का चरित्र-चित्रण